आदर्श प्रश्न- पत्र - 5
संकलित परीक्षा - I
विषय - हिंदी 'ब'
कक्षा - दसवी

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है -
   खंड क- **20 अंक**
   खंड ख- **15 अंक**
   खंड ग - **30 अंक**
   खंड घ - **25 अंक**
2. चारो खंडो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।

खंड-क
(अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर खिए-**

मोहन राकेश के कश्मीर पहुँचते ही तय हुआ कि उपेंद्रनाथ अश्क को श्रीनगर या पहलगाँव में स्थापित करके हम दोनों कहीं और निकल जाएँगे - गुलमर्ग या किसी भी जगह ..... हम बंजारों कि तरह सिर्फ़ घूमेंगे और गप्पें लड़ाएँगे | अपने कलम होटल-मालिक के पास जमा करवा देंगे और लिखने-लिखाने का काम नहीं करेंगे | जो लिखता हुआ पकड़ा जाएगा, वह दूसरे दिन के घूमने, नाश्ते और खाने का पूरा खर्चा उठाएगा | इस नियम में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा और अश्क जी से बहुत सीरियसली कहा जाएगा कि वे अपना कीमती वक्त बर्बाद न करें, अपनी सेहत का ख्याल रखने के साथ-साथ साहित्य कि सेहत का भी ख्याल रखें और मोटा उपन्यास या नाटक हर हालत में पूरा करें | यह मुमकिन न हो, तो अगली महान रचनाओं की रूपरेखा बनाएँ | तानी अश्क जी साहित्य में रहें और हम कश्मीर में ! पर अश्क के भी जीवट का जवाब नहीं ! कोल्हाई चलने के लिए वे सुबह-सुबह ही हम दोनों से पहले उठाकर तैयार हो गए थे और चीख रहे थे - " यारों ! नौ मील का रास्ता है ... जल्दी नहीं चलोगे तो मारे जाओगे ....|"

पिछले दिन के सफ़र ने काफ़ी थका दिया था | पहलगाँव से आड़ू से लिद्दरवट | हम सुबह उठाकर लिद्दरवट के डाक-बँगलें से कोल्हाई के लिए चल पड़े | सचमुच रास्ता बहुत भयानक था और खतरनाक भी | दाहिनी और लिद्दर नदी बह रही थी, उसका पानी चट्टानों के नीचे था, और जगह-जगह जहाँ चट्टानों के बीच में खाली जगह थी एकाएक पानी के गहरे कुंड आ जाते थे, जिनमे गिर जाने के बाद निकलना संभव ही नहीं था | कुछ दूर पहुँचने पर रास्ता सँकरा होने लगा | बाई ओर टूटे हुए पत्थरों के पहाड़ आ गए | दाहिनी ओर दरिया के उस पार देवदार के पेड़ बंद छातों की तरह उगे हुए थे | कुछ दूर पर ही भोजपत्र का जंगल आया | यादगार स्वरूप हमने कुछ छाल उताकर ओवरकोट की जेबों में रख ली | भोजपत्र के जंगल के आगे रास्ता कुछ साफ़ था | घाटी भी खुल गई थी | तभी आराम से चलते-चलते

ममदू ने कहा, “साब, कोल्हाई के ऊपर एक दूधसर लेक होता | बहोत खूबसूरत लेक है ... कश्मीर का सबसे खूबसूरत लेक !”

हमने हामी भर दी | सतलंजन का मैदान सामने था | उलटे तिकोन की तरह | यह मैदान बहुत खौफ़नाक था | कभी भी नालों में पानी बढ़ सकता थका और पूरा मैदान गहरी झील में तब्दील हो सकता था | हम कुछ देर रुकना भी चाहते थे पर ममदू ने आगाह किया, “कुछ पता नहीं साब ! हम यहाँ रुकने का सलाह नहीं देगा ... क्या पता कब नालों में पानी आ जाए और निकलना मुश्किल हो जाए | मालूम नई पड़ेगा कि ऊपर पहाड़ पर पानी आ गया है | जल्दी-जल्दी पार करने का, साब !” शायद ममदू कुछ ज़्यादा ही डरा हुआ था पर अनजानी जगहों में जानकारों कि गैरज़रूरी बातों को भी मानना पड़ता है | फिर पथरीली और बेहद पतली घाटियों में होते हुए हम एक ऐसी जगह पहुँच जहाँ से आगे का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था | तीनों तरफ़ के पहाड़ सिमसिम कि तरह बंद थे | सिर्फ़ वापस जाने वाला रास्ता खुला हुआ था | हम लोग रुक गए | ममदू ने आगे बढ़कर बताया, “इधर दाहिनी तरफ़ दर्रा है ... इसी दर्रा में दो मील आगे कोल्हाई ग्लेशियर है | उधर उसके पास तक कोई नई जा सकता | इधर मोड़ पर मुड़ते ही बर्फ़ीली नदी दिखाई पड़ेगा और बर्फ़ का छोटा-सा झील जिससे लिद्दर का दरिया निकलता है ...“ चारों ओर सन्नाटा था | एक चिड़िया तक कहीं नहीं थी | तीनों ओर नीले-नीले पहाड़ खड़े थे | जैसे वे बर्फ़ीली हवाओं से नीले पड़ गए हों ! ऊपर आसमान साफ़ था | घड़ी देखी तो साढ़े ग्यारह बज रहे थे | हम तीनों ही खामोश थे | वीरान सौंदर्य चारों ओर बिखरा हुआ था | नदी की धारा नीली, हरी और सिलेटी चट्टानों के पहाड़ सन्यासियों कि तरह चुप खड़े थे |

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनिए |

(क) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए |

(ख) उपेंद्रनाथ अश्क को श्रीनगर या पहलगाँव छोड़कर लेखक ने कहाँ जाने कि बात कहीं?

(ग) लिद्दरवट और कोल्हाई के बीच खतरनाक रास्ते का वर्णन कीजिए |

(घ) भोजपत्र के जंगल से लेखक और साथियों ने यादगार स्वरूप ओवरकोट कि जेबों में क्या रख लिया?

(ड) सतलंजन के मैदान में रुकना लेखक वे साथियों ने उचित क्यों नहीं समझा?

(च) पथरीली और बेहद पतली घाटियों में फँस जाने पर ममदू ने आगे बढ़कर क्या बताया?

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

जब हम सत्य को पुकारते हैं
तो वह हमसे परे हटता जाता है
जैसे गुहारते हुए युधिष्ठिर के सामने से
भागे थे विदुर और भी घने जंगलों में
सत्य शायद जानना चाहता है
कि उसके पीछे हम कितनी दूर भटक सकते हैं
कभी दिखता है सत्य
और कभी ओझल हो जाता है
और हम कहते रह जाते हैं कि रुको यह हम हैं
जैसे धर्मराज के बार-बार दुहाई देने पर
कि ठहरिए स्वामी विदुर
यह मैं हूँ आपका सेवक कुंतीनंदन युधिष्ठिर

वे नहीं ठिठकते
यदि हम किसी तरह युधिष्ठिर जैसा संकल्प पा जाते हैं
तो एक दिन पता नहीं क्या सोचकर रुक ही जाता है सत्य
लेकिन पलटकर सिर्फ खड़ा ही रहता है वह दृढ़निश्चयी
अपनी कहीं और देखली दृष्टि से हमारी आँखों में देखता हुआ
अंतिम बार देखता-सा लगता है वह हमें
और उसमें से उसी का हल्का सा प्रकाश जैसा आकार
समा जाता है हममें
जैसे शमी वृक्ष के तने से टिककर
न पहचानने में पहचानते हुए विदुर ने धर्मराज को
निर्निमष देखा था अंतिम बार
और इसमें से उनका आलोक धीरे-धीरे आगे बढ़कर
मिल गया था युधिष्ठिर में
सर झुकाए निराश लौटते हैं हम
कि सत्य अंत तक हमसे कुछ नहीं बोला
हाँ हमने उसके आकार से निकलता वह प्रकाश-पुँज देखा था
हम तक आता हुआ
वह हममें विलीन हुआ या हमसे होता हुआ आगे बढ़ गया |

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) काव्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए |

(ख) सत्य क्या जानने को जिज्ञासु है?

(ग) “जैसे गुहारते ....जंगलों में” - कवि ने क्या व्यंजना की है?

(घ) सत्य की पहचान आप कैसे करेंगे ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए |

खण्ड - ख
(व्याकरण)

3. **निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रह और भेद लिखें |**

(क) महाजन

(ख) अमृतधारा

(ग) नील गगन

(घ) परीक्षा भवन

4. **कोष्ठक में दिए गए समस्त पद के उचित शब्द समूह को चुन कर रिक्त स्थान भरें|**

(क) शर्त के अनुसार पांडवों ने ____________ काटा| (वन में वास, वन में वासी, वन के उत्पाद, कुछ नहीं)

(ख) महादेव _________ कहलाते हैं | (नीला है कंठ जिसका, जो हमेशा नशे में रहते हैं, जो भभूत लगाते हैं|)

(ग) माता-पिता को प्रणाम कर राम ने ____________ किया | (वन में गमन, घर में वास युद्ध में गमन, जल में गमन |)

(घ) बिहारी का __________ प्रसिद्ध है | (सात दोहों का समूह, सात सौ दोहों का समूह, साथ हज़ार दोहों का समूह, सात लाख दोहों का समूह)

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए|**

(क) 'हाथ न आना' मुहावरे का क्या अर्थहै?

(ख) 'भाग जाना' के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला मुहावरा कौन-सा है?

(ग) हक्का-बक्का रह जाना मुहावरे का अर्थ व्यक्त करते हुए वाक्य लिखें|

(घ) 'किस्सा खत्म करना' मुहावरे का अर्थ लिखें |

6. **निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए।**

(क) उसने ईश्वर से कुछ माँगने की मुद्रा में अपने हाथ ऊपर उठाए। (मिश्र वाक्य में)

(ख) गए और बकरियाँ भी घास खा रही है। (संयुक्त वाक्य में)

(ग) मैंने कल एक ऐसा बच्चा देखा जो बहुत स्वस्थ था। (सरल वाक्य में)

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

7. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए-**

"ढीठता की हद है | मैं जब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो | गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालुम?" इतना बोलकर वह जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी | तताँरा को मानो कुछ होश आया | उसे अपनी गलती का अहसास हुआ | वह उसके सामने रास्ता रोककर, मानों गिड़गिड़ाने लगा |

"मुझे माफ़ कर दो | जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ | तुम्हें देखकर मेरी चेतना लुप्त हो गई थी | मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा | बीएस अपना नाम बता दो |" तताँरा ने विवशता में आग्रह किया | उसकी आँखें युवती के चेहरे पर केंद्रित थीं | उसके चेहरे पर सच्ची विनय थी |

"वा ..... मी ...... रो ....." एक रस घोलती आवाज़ उसके कानों में पहुँची | "वामीरो .... वा ...... मी ...... रो .... वाह कितना सुंदर नाम है | काल भी आओगी न यहाँ ?" तताँरा न याचना भरे स्वर में कहा |

(क) तताँरा को अपन कौन-सी गलती का अहसास हुआ?

(ख) तताँरा ने विवशतापूर्वक युवती से क्या आग्रह किया?

(ग) तताँरा ने नाम जानकर वामीरो से क्या कहा?

8. **निम्नलिहित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-**

(क) इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं है, असल चीज़ है बुद्धि विकास | आशय स्पष्ट कीजिए |

(ख) फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र कि विशेषताओं पर प्रकाश डालिए |

(ग) कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

9. शाम के समय, समुद्र किनारे तताँरा की प्राकृतिक अनुभूति का वर्णन कीजिए |

10. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि |
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि ||

(क) उपर्यक्त साखी से क्या संदेश मिलता है? स्पष्ट कीजिए |

(ख) 'दीपक देख्या माँहि' का क्या आशय है?

(ग) ईश्वर प्राप्ति के लिए क्या आवश्यक है?

11. 'तोप' कविता में दो प्रतीकों का चित्रण है | कैसे?
12. "कुमार्ग पर नहीं चलने की सीख देने वाले धर्म स्थानों तथा संयुक्त परिवार से लुप्त हो रहे भ्रातृभाव ने काका का जीना दुश्वार कर दिया |" प्रश्नोक्त पंक्ति किन मूल्यों को इंगित करती हैं?

खण्ड-घ

('लेखन')

13. दिए गए संकेत बिन्दुओ के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए-
    भारतीय नारी कि महत्ता
    संकेत-बिंदु : (i) करुणा, माया और ममता की मूर्ति (ii) अनंत गुणों से परिपूर्ण (iii) ऐतहासिक संदर्भ (iv) भारतीय और पाश्चात्य नारी में अंतर |
14. स्वास्थ्य विभाग द्वारा आपके क्षेत्र की गंदगी की ओर कोई ध्यान नहीं दिए जाने पर किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए |
15. दिल्ली विकास प्राधिकरण ने विभिन्न निवेदादाताओं में से कुछ योग्य निविदादाताओं को अपनी आवश्यकता जे अनुरूप पाया है | उन्होंने अपनी निविदा में कार्य की क्या कीमत निर्धारित की है उसे बताने के लिए निविदादाताओं की सभा बुलाने के लिए सूचना जारी कीजिए |
16. यात्री और बस चालक के बीच हुआ संवाद |
17. आप अपनी पुरानी कार को बेचने के लिए विज्ञापन तैयार करे।

आदर्श प्रश्न- पत्र - 5

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'ब'

कक्षा - दसवी

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **(क)** उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक - लिद्दरवट से कोल्हाई कि यात्रा |

   (ख) उपेंद्रनाथ अश्क को श्रीनगर या पहलगाँव छोड़कर लेखक ने गुलमर्ग या किसी भी जगह जाने कि बात कही |

   (ग) लिद्दरवट और कोल्हाई के बीच का रास्ता बहुत भयानक और खतरनाक था | दाहिनी और लिद्दर नही बह रही थी, उसका पानी चट्टानों के नीचे था, और जगह-जगह जहाँ चट्टानों के बीच में खाली जगह थी एकाएक पानी के गहरे कुंड आ जाते थे, जिनमे गिर जाने पर निकलना संभव ही नहीं था |

   (घ) भोजपत्र के जंगल से लेखक और साथियों ने यादगार-स्वरूप कुछ छाल उतारकर ओवरकोट कि जेबों में रख ली |

   (ड) सतलंजन का मैदान बहुत खौफ़नाक था | कभी नालों में पानी बढ़ सकता था और पूरा मैदान गहरी झील में तब्दील हो सकता था |

   (च) पथरीली और बेहद पतली घाटियों में फँस जाने पर ममदू ने आगे बढ़कर बताया कि इधर दाहिनी तरफ दर्रा है, इसी दर्रे में दो मील आगे कोल्हाई ग्लेशियर है| उधर उसके पास तक कोई नहीं जा सकता| इधर मोड़ पर मुड़ते ही बर्फ़ कि नदी दिखाई पड़ेगी | और बर्फ़ का छोटा-सा झील जिससे लिद्दर का दरिया निकलता है |

2. **(क)** काव्यांश में कवि सत्य की लुका-छिपी का वर्णन करता है | कवि ने महाभारत के विदुर के पीछे-पीछे दौड़ते हुए युधिष्ठिर की कथा को आधार बनाकर अपनी बात कही है |

   (ख) सत्य संभवतः यह जानना चाहता है कि सत्य को पाने के लिए आप कितने लालायित हैं, उसके पीछे कितनी दूर तक दौड़ने को तैयार हैं|

   (ग) कवि ने महाभारत के विदुर-युधिष्ठिर कि घटना के माध्यम से व्यंजना की है कि ये दोनों महापुरुष धर्मराज के अंश से पैदा हुए हैं तथा दोनों ही सत्य के उपासक हैं|

   (घ) सत्य की पहचान हम इन बिंदुओं के आधार पर करेंगे -

   (i) युधिष्ठिर जैसे संकल्पवान बनकर |

   (ii) निरंतर सत्य को पहचानकर उसकी प्रतिष्ठा करके

   (iii) सत्य कि दृष्टि कहीं और होती है फिर भी वह हमारी आँखों में देखता है |

खण्ड - ख

(व्याकरण)

3. **(क)** कर्मधारय - महान हैं जो मन

(ख) तत्पुरुष - अमृत कि धारा

(ग) कर्मधारय - नीला है जो गगन

(घ) तत्पुरुष - परीक्षा के लिए भवन

4. **(क)** वन में वास

(ख) नीला है कंठ जिसका

(ग) वन में गमन

(घ) सात सौ दोहों का समूह

5. **(क)** पकड़ से बाहर होना |

(ख) नौ दो ग्यारह होना |

(ग) गौरव मुझे जोकर के रूप में देखकरआश्चर्यचकित रह गया |

(घ) अंत करना |

6. **(क)** उसने अपने हाथ ऐसी मुद्रा में ऊपर उठाए जैसे ईश्वर से कुछ माँग रहा हो।

(ख) गायें और बकरियाँ भी आईं और घास खाने लगी।

(ग) मैंने कल एक बहुत स्वस्थ बच्चा देखा।

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

7. **(क)** तताँरा को अपनी गलती का अहसास हुआ कि वामीरों उसको परिचय पूछ रही है और वह अपना परिचय नहीं देकर वामीरों को गीत गाने को कह रहा है | यह स्थिति प्रथम भेंट के आकर्षण को स्पष्ट करती है|

(ख) तताँरा ने विवशतापूर्वक युवती से आग्रह किया कि, "मुझे माफ़ कर दो| जीवन में पहली बार मैं विचलित हुआ हूँ| तुम्हें देखकर मेरी चेतना लुप्त हो गई थी| मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा | बस अपना नाम बता दो |"

(ग) तताँरा ने नाम जानकर वामीरों से कहा, कि वाह कितना सुंदर नाम है| कल भी आओगी न यहाँ|

8. **(क)** बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को समझाते हैं कि परीक्षा में पास होना कोई बड़ी बात नहीं है| बड़ी बात तो बुद्धि का विकास करना है| यदि कोई व्यक्ति अनेक परीक्षाएँ पास कर ले किंतु उसे अच्छे-बुरे में अंतर करना न आए तो उसकी पढाई व्यर्थ है| पुस्तकों को पढ़कर उसके ज्ञान से अपनी बुद्धि का विकास करना ही असली शिक्षा है|

(ख) फ़िल्म निर्माता के रूप में 'तीसरी कसम' शैलेंद्र की पहली और अंतिम फ़िल्म थी | उन्होंने इस फ़िल्म का निर्माण पैसा कमाने के उद्देश्य से नहीं किया था | फ़िल्म-निर्माता के रूप में शैलेंद्र का महत्त्व विशिष्ट है| वे निर्माता पैसा कमाने हुए भी साहित्यिक बने रहे | वे फ़िल्मी चकाचौंध में रहते हुए भी धन और यश-लिप्सा से दूर बने रहे | उन्होंने फिल्मों को गहरा साहित्यिक बनाने का प्रयास किया | फ़िल्म कविता जैसी सघन, गहन और प्रभावी थी |

(ग) 26 जनवरी, 1931 के दिन कलकत्ता के लोगों ने अंग्रेज़ी सरकार का डटकर विरोध किया और स्वतंत्रता दिवस मनाया | इसी कारण यह दिन कलकत्ता वासियों के लिए महत्त्वपूर्ण था |

9. एक शाम तताँरा दिन-भर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा | सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था | समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं | पक्षियों की सायंकालीन चाहचाहाहटें

शनैः शनैः क्षीण हों को थीं | उसका मन शांत था | विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा | तभी कहीं पास में उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया | गीत मानों बहता हुआ उसकी तरफ आ रहा हो | बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता | गायन प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा | लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की | चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे | वह विकल-सा उस तरफ़ बढ़ता गया | अंततः उसकी नजर एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगो को निहारते हुए गा रही थी | यह एक शृंगार गीत था |

10. **(क)** उपर्युक्त साखी से हमें अपने मन से अहंकार दूर करने का संदेश मिलता है | साखी में कहा गया है कि जब तक साधक के मन में अहंकार था तब तक उसके मन में ईश्वर नहीं था और जब साधक ने अपने मन से अहंकार भाव को निकाल फेंका तब ईश्वर कि सहज ही प्राप्ति हो गई | कवि का कहना है कि ईश्वर और अहं साथ-साथ नहीं रह सकते |
    (ख) प्रश्नोक्त पंक्ति का आशय यह है कि ज्ञान रूपी दीपक जलते ही मनुष्य का अंधकार रूपी अज्ञान नष्ट हो जाता है|
    (ग) ईश्वर प्राप्ति के लिए अहं भाव का त्याग अति आवश्यक है|

11. कविता 'तोप' में दो प्रतीकों का चित्रण है | यह कविता हमें याद दिलाती है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करें के इरादे से आई थी | भारत ने ही उसका स्वागत किया था, लेकिन देखते-देखते वह हमारी शासक बन बैठी | उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार कीं | उन तोपों ने इस देश को फिर से आजाद कराने का सपना साकार करने निकले जाँबाजों को मौत के घाट उतारा | पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका | तोप को निस्तेज कर दिया | फिर भी हमें इन प्रतीकों के बहाने यह याद रखना होगा कि भविष्य में कोई ओअर ऐसी कंपनी यहाँ पाँव ने जमाने पाए जिसके इरादे नेक नहीं हो और यहाँ फिर वहीं तांडव मचे जिसके घाव अभी तक हमारे दिलों में हरे हैं | भलें ही अंत में उनकी तोप भी उसी काम क्यों न आए जिस काम में इस पाठ की तोप आ रही है |

12. धर्मभीरु लोगों के चलते वर्तमान में धर्मस्थान अपना लक्ष्य भूलते जा रहे हैं| उनका लक्ष्य समाजसेवी के स्थान पर स्वार्थलोलुपता, धनलिप्सा, भ्रष्टाचार तथा हिंसावृत्ति ने ले लिया है| वहीं परिवारों से भ्रातृभाव का लोप होता जा रहा है| समग्रतः हम कह सकते हैं कि आज का समाज भौतिकवाद की ओर अग्रसर है| आज के रिश्ते स्वार्थ पर आधारित हैं | भाग-दौड़ की वर्तमान जिंदगी में एक-दूसरे का सुख-दुख जानने का समय नहीं रह गया है| समाज में रिश्तों की अहमियत दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है| जिससे हम अपना स्वाभाविक स्वरूप खोते जा रहे हैं| मनुष्य की स्वाभाविकता का नित्य पतन ही 'हरिहर काका' जैसे मनुष्यों की परेशानी का मुख्य कारण है| प्रश्नोक्त पंक्ति हमें अपनी स्वाभाविक वृत्ति बनाए रखकर समाज सेवा की प्रेरणा देती है| साथ ही यह हमें धर्म स्थानों पर परिवार से असामाजिक वृत्तियों को दूर करके एक नवीन समाज का निर्माण करने की प्रेरणा भी देती है |

खण्ड-घ

('लेखन')

13. **"भारतीय नारी कि महत्ता"**

भारतीय नारी दया, करुणा, ममता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है और वक्त पड़ने पर वह प्रचंड चंडी भी बन जाती है| सृष्टि के आरंभ में ही अनंत गुणों का आगार रही है जिसकी गौरवगाथा से भारतीय धार्मिक साहित्य एवं इतिहास के पन्ने भरे हुए हैं| पृथ्वी की-सी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र की-सी गंभीरता, पर्वतों की-सी मानसिक उच्चता तथा चन्द्रमा की-सी शीतलता हमें एक साथ नारी के हृदय में दृष्टिगोचर होती है| गार्गी, मैत्रीय, अनुसूया, अहिल्या, सीता, द्रौपदी, रुक्मिणी, तारा, मंदोदरी, कुंती, गांधारी अदि अनेक ऐसी नारियाँ हैं जिन पर भारतवासी गर्व करते हैं और उनके पावन चरित्रों को सुनते-सुनते हुए प्रेरणा लेते हैं| स्वतंत्रता संग्राम का श्रीगणेश झाँसी की रानी के कर कमलों से संपन्न हुआ था| राजनीतिक क्षत्र में भी भारतीय नारी सदा अंग्रिम पंक्ति में रही है| भारतीय नारी आज भी पाश्चात्य नारी की अपेक्षा कहीं अधिक सहनशील तथा संतोषी है| इस वजह से कई ऐसे प्रवासी भारतीय हैं जो भारिय नारी को अपना जीवन साथी बनाना उचित समझते हैं| इस देश की नारी की लग्न और निष्ठा देखकर कहा जा सकता है कि उसका भविष्य उज्ज्वल है|

14. प्रति,

प्रधान संपादक,
दैनिक हिंदुस्तान,
कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
नई दिल्ली - 110001,

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से दक्षिण दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों का ध्यान साधनगर क्षेत्र की गंदगी की ओर आकृष्टकराना चाहता हूँ | आशा है कि आप इसे अपने अखबार में प्रकाशित करेंगे |

साधनगर दिल्ली का ऐसा क्षेत्र है जहाँ अधिकतर लोग मध्यवर्ग और निम्नवर्ग से संबंध रखते हैं | यहाँ की गलियाँ व सड़कें हर समय पानी से भरी रहती हैं क्योंकि पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं है | जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे पड़े हैं जिन्हें निगम के कर्मचारी उठाकर नहीं ले जाते | इस संबंध में निगम के अधिकारियों से कई बार मिलने की कोशिश की, लिखितरूप में दिया, परंतु झूठे आश्वासनों के सिवाय कुछ नहीं मिला |

इसके अतिरिक्त, एकनई समस्या भी सामने आई है | निगम के सफाई कर्मचारी उस इलाके में आते हैं और बिना काम करे चले जाते हैं | उनसे कुछ कहने पर वे दुर्व्यवहार करते हैं तथा अतिरिक्त पैसे की माँग करते हैं |

हमें आशा है कि इस मामले पर नगर निगम गंभीरता से विचार करेगा तथा इस इलाके की समस्या को दूर करने की कोशिश करेगा | कर्मचारियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की भी हमें पूर्ण उम्मीद है |

भवदीय,
मोहित मित्तल
अध्यक्ष,

साधनगर सुधार समिति,

पालम, दिल्ली

दिनांक 25 सितम्बर 2016

15. **दिल्ली विकास प्राधिकरण**

(I.S.O. 9001:2008 एवं I.S.O. 14001:2004 प्रमाणित संस्था)

पत्र सं० 271/व्याव० अनु०/14 दिनांक 25/02//2014

"प्राइस-बिड खोले जाने संबंधी सूचना"

कोयल एन्क्लेव योजना स्थित ग्रुप हाउसिंग भूखंड सं० जी०एच०-6 की टू बिड सिस्टम के अंतर्गत नीलामी के संबंध में दिनांक 18.02.2014 को प्राप्त निविदाओं में मै० ओमकार नेस्टस प्रा०लि० एंड कंसोर्टियम एवं मै० जे० के० जी० कन्स्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड कंसोर्टियम की तकनीकी बिड अर्ह पायी गयी है | अतः संबंधित निविदादाताओं को सूचित किया जाता है कि उक्त अर्ह निविदादाताओं की प्राइस बिड दिनांक 28 को सायं 4.00 बजे प्राधिकरण सभागार में खोली जाएगी |

कृपया सभी निविदादाता निर्धारित समय पर दिल्ली विकास प्राधिकरण सभागार में उपस्थित होने का कष्ट करें |

16. **यात्री -** भाई| बस कितने बजे चलेगी ?

चालक - साढ़े पाँच बजे |

यात्री - लेकिन साढ़े पाँच तो हो गए हैं, फिर देरी क्यों ?

चालक - बस चलने ही वाली है |

यात्री - आजकल बसों के चलने का कोई समय नहीं है | आपकी इच्छा से चलती है |

चालक - आप बिना वजह ही मुझसे बहस कर रहे हैं | हमारी बसों का समय है और हम उसी के अनुसार चलते हैं |

17.